मन

सर्वथा प्रेम से श्रेय भला,

इसका तजना निर्मम होता।

जीवन का घंटा रणित ध्वनित,

मैं रहा किंतु रोता–धोता।

साधना तो होता है माध्यम,

पर साध्य लक्ष्य होता अपना।

साध नही ठीक हुआ न अगर,

तो ख़ाक बनेगा यह सपना।

कहने से करना बहुत कठिन,

होता जीवन में देख लिया।

राई को थाम लिया तो क्या,

पर्वत को हमने तौल दिया?

इस ओर छलक जाती लालच,

उस ओर लालच झलक रही।

मन की गति दोलों पर पेंगें,

भरती वन्या सी विहंस रही।

है चित्त मात्र संचय करता,

जो चित्त गतागत का मधु–कटु।

मांगें करती जब बुद्धि,

है भार इस तब स्वागत का।

मन तो रहता चंचल–चंचल,

क्षण एक इधर–क्षण एक उधर।

सोने पर भी जगता रहता,

हो सिवा न इसके काम उपर।

मगर बेचारे मन को दोश, मगर,

देना होगा क्या न्याय सही?

दिक् भ्रमित और बुद्धि–चालित,

करता कोई यह भूल नहीं।

मन तो पावन गंगा जल है,

यह तो है निर्मल और विमल।

करता कुछ भेद नहीं यह तो,

अमृत क्या है, क्या और गरल।

बुद्धि के सम होते होते,

जब मन का गढ़ ढह जाता है।

तब तन की कौन करे चिंता,

जिंदा–मुर्दा रह जाता है।

अनुभूत सदा ऐसे क्षण की,

जिसमें अपनापन ही खोता,

गुरु–कृपा–साध्य होती केवल,

तन–मन का बोध नहीं होता।

रूक जाए अगर चंचलता तो

हो जाए वापी–जल–जैसा–

मटमैला–गंदला–औ अजेय,

रहने दो जैसा का तैसा।

तन

तन के विरूद्ध कुछ क्या कहना,

जो उसे खिलाओ खा लेगा,

पी लेगा वह जो कुछ दोगे,

जैसे रखो वह रह लेगा।

तन रहते लोक सुधर जाता,

इससे पर लोक संवर जाता,

तेरा कुछ भाग्य न कर सकता,

ब्रह्म का लेखा बदल जाता।

स्वीकारें हम, ना स्वीकारें

जो लिखा भाग्य में हम उसको,

हम पर पूरा–पूरा निर्भर,

किस तरह बदल देंगे इसको।

इसका होना संभव होता,

लेकिन इसके रहते–रहते।

यह द्वार सभी साधन का है

जन इसीलिए ऐसा कहते हैं।

यह द्वार निर्मम सभी साधन का है,

निर्मम–निश्काम–अकिंचन का।

यह कृपा–साध्य, निज चाह–साध्य,

क्रता क्या भारणागत तन का।